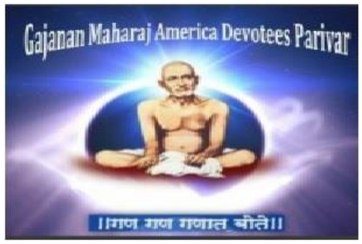

Gajanan Maharaj America Devotees Parivar

Vastu Pujan Vidhi

Puja Material

Charan Paduka (small size)

Flowers pallets (Lots of for Ashtotar Naamavali) OR Akshta

Haldi-Kumkum

Chandan (Optional)

Rice Particles (Akshata)

Water (in a vessel with Charan Tirth and Udi)

Cold Water (for achaman)

Plate (at least 4)

Achmani,

Spoon (at least 3)

Ghee-Diya (If Ghee is not available, use Oil)

Etra (Perfume)

Agar Batti

Asan (for seating if you do not have asan you can use any washed hand towel)

Gajanan Avahan & Ashtak

Gajanan Ashtotar and Aarti booklet

Process

1. Place Maharaj's photo at desk or table on clean cloth, and before that make Swastik on place and put some rice particle (you can keep Kul-Deveta and Kul Devi photos also)
2. Place Gud, Coconut also and offer some flowers
3. Place water Vessel with Udi and Charan Tirth
4. Place the Asan and seat on it (every individual should have their own asan to seat no it. You cannot share the asan)
5. Achman Process
    a. Put Udi Tilak on forehead
    b. Take cold water (3 times) in right hand and sip while reciting "**Om Keshavay Namah, Om Narayanay Namah, Om Madhavay Namah"**
    c. Take cold water in right and put water in plate while reciting **"Om Govinday Namah"**

    (Repeat it twice)
6. Fold your hands & recite **"अंचित्य जगताप्रति कृति, तुझी कोणा न कळे ।। असो खल ही केवढा, तव कृपे सुमार्गी वळे । उणे पुढती ये तुझ्या, खचीत रत्नचिंतामणी ।। शिरी सतत माझीया, वरदहस्त ठेवा झणी।।."**
7. Fold your hands & recite **"Guru Brahma Guru Vishnu, Guru Devo Maheshwara, Guru Sakshat Param Brahma, Tasmai Shri Gurave Namah."**
8. Take a clean plate (Thali), place few rice particles & then place paduka
9. Light the Ghee- Diya & ladies put haldi then kumkum on Diya & then on your forehead.
10. Put Chandan Tilak (you can use Kumkum also) and frangrance (Etra) on Paduka
11. 5 times circulate the Ghee-Diya (aarti) to Paduka while reciting **"Om Shri Gajananay Namah"**
12. 5 times circulate the lit Agar-Batti to paduka while reciting "**Om Shri Gajananay Namah"**
13. Fold your hand (Namaskar Mudra)
14. Recite Gajanan Avahan (Audio or paper)
15. Place rice particle in left hand and cover with right hand
16. Now recite **Sankalp**
17. Put particle in plate (later you can mix with regular rice used and cook it)

18. Now recite **108 names of Gajanan Maharaj** (with each name offer few flower pallets to Paduka)
19. Place hands in dhyam Mudra at folded knees, close eyes
20. Recite 108 times **“Gan Gan Ganat Bote”** *(You can offer for 11 minutes also)*
21. Now recite **Gajanan Ashtak**
22. Offer Naivadhyam : Make mandal keep naivadhya on it & offer it Maharaj with reciting **“Jai Gajanan”** 5 times
23. 5 times circulate the Ghee-Diya (aarti) with **“Om Shri Gajananay Namah”**
24. 5 times circulate the lit Agar-Batti with **“Om Shri Gajananay Namah”**
25. Offer Naivadhyam : Make mandal keep naivadhya on it & recite **“Jai Gajanan”** 5 times
26. Offer **Aarti “Jai Jai Satchit Swarupa”**
27. Do not step on asan, you can sit & do aarti if you want.
28. Offer Prayers (**Sada Sarvada and last page prayer**)
29. Naam Gajar **“Anant Koti Bhramad Nayak, Maharajadhiraj Yogiraj, Parabhrama Sachidanand, Bhakta Pratipalak, Shegaon Niwasi, Samarath Sadguru Shri Gajanan Maharaj Ki Jai”**
30. Achman Process just once
    a. Take cold water (3 times) in right hand and sip while reciting **“Om Keshavay Namah, Om Narayanay Namah, Om Madhavay Namah”**
    b. Take cold water in right and put water in plate while reciting **“Om Govinday Namah”**
31. Everybody has to take off their own asan (fold and keep).
32. Take that Abhishek water & sprinkle that water in your house, because this water has the energy that will flow in your house as you sprinkle it.

॥ श्री गजानन महाराज आवाहन ॥

गजानना या करी आवाहन आसनस्थ व्हावे ।

शुध्दोदक हे पाद्य अर्घ्य अन आचमना घ्यावे ।

दुध दही घृत मध शर्करा पंचामृत स्नान ।

अथर्वशिर्षे रूद्र सुक्त सह श्री सुक्ते स्नान ॥

जरतारीची शाल अर्पिली यज्ञोपवितहि तसे ।

सर्वांगाला परिमल भाळी तिलक केशरी असे ।

फुले सुगंधी हिरव्या नाजुक दूर्वा एकवीस ।

धुप निरंजन चुन भाकरी ते नैवेद्यास ॥

कर्पुरर्ति मंत्रपुष्प घ्या प्रदक्षिणा नमन ।

चिलिम दिधली सेवा करितो अनन्य मी शरण ।

मंत्र कर्म वा भक्ती न जाणे काल्पनिक पूजा ।

सदभावाने केली उध्दरि निःस्सिम भक्त तुझा ॥

गण गण गणात बोते भजनी दंग सदा तुम्ही ।

सिध्द मंत्र हा जपुनी सर्वदा पावन हो आम्ही ।

एक मागणे शिरी असावा वरद हस्त तुझा ।

गजानना ही आस पुरवी घ्या नमस्कार माझा ॥

मानस पूजा श्लोक त्रिकाली एकविस आवर्तने ।

उच्चारुनी संकल्प आपुला करी जो श्रध्देने ।

मिटतील चिंता हरतिल व्याधि टळतिल आपत्ती ।

गजनानाच्या कृपा प्रसादे सहज मोक्ष प्राप्ती ॥

॥ श्री गजानन महाराज की जय ॥

!!श्री गजानन संकल्प !!

गजानन भक्तांची प्रतिज्ञा

गजानन महाराज माझे वा सर्वांचे आहेत। मी माझे महाराजंची भक्ती करीन आणी महाराजंच्या भक्तांचा

सदैव आदर करीन। महाराजची वा सेवकांशी सदैव निष्ठा राहीन।

मी माझ्या वागन्यातून, चरीत्रायातून महाराजंच्या नाव झाईल असे कधीनी वागणार नाही।

अवघे विश्व गजाननमय या साठी सदैव प्रयत्न करीन।

आपण महाराजंचे सेवक आहोत , महाराजंची सेवा करणे हा आपला धर्म आहे, तो निरन्तर पालेन।

॥ श्री गजानन महाराज की जय ॥

!! श्री गजानन महाराज अष्टक !!

गजानना गुणागरा परम मंगला पावना, अशीच अवघे हरी दुरित तेवि दुर्वासना ।
नसे त्रिभुवनामध्ये तुजविणे आम्हां आसरा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

निरालसपणे नसे घडली अल्प सेवा करी, तुझी पतितपावना भटकलो वृथा भूवरी ।
विसंबत न गाय ती आपुलिया कधी वासरा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

आलास जगी लावण्या परतुनी सुवाटे जन, समर्थ गुरुराज ज्या भूषवी नाम नारायण ।
म्हणून तुज प्रार्थना सतत जोडूनिया करा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

क्षणांत जल आणिले नसून थेंब त्या वापिला, क्षणांत गमनाप्रती करिसी इच्छीलेल्या स्थला ।
क्षणांत स्वरूपे किती विविध धरिसी धीवरा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

अगाध करणी तुझी गुरुवरा न लोकां कळे, तुला त्यजून व्यर्थ ते आचरितात नाना खुळे ।
कृपा उदक मागती त्यजुनी गौतमीच्या तीरा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

समर्थ स्वरूपाप्रती धरुनी साच बाळापुरी, तुम्ही प्रकट जाहला सुशील बाळकृष्णा घरी ।
हरी स्वरूप घेवूनी दिधली भेट भीमातीरा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

सच्छिद्र नौके प्रती त्वदीय पाय हे लागतां, जलांत बुडता तरि तिजसी नर्मदा दे हातां ।
अशा तुजसि वाणन्या नच समर्थ माझी गिरा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

अतां न बहु बोलतां तव पदांबुजा वंदितो, पडो विसर न कदा मदीय हेच मी मागतो ।
तुम्ही वरद आपुला कर धरा गणूच्या शिरा, करी पदनतावरी बहु दया न रोषा धरा ॥

॥ श्री गजानन महाराज की जय ॥

II श्री गजानन महाराज अष्टोत्तरशतनामावली II

ॐ अक्षय सुखाय नमः
ॐ अयोनिसंभवाय नमः
ॐ अखिलेशाय नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ अभयाय नमः
ॐ अभेदाय नमः
ॐ अनंताय नमः
ॐ अभ्युदयाय नमः
ॐ अत्रिपुत्राय नमः
ॐ अखंडाय नमः
ॐ अविनाशिनेन नमः
ॐ अमरत्वाय नमः
ॐ अग्न्युत्पत्तिकराय नमः
ॐ अग्निशमनाय नमः
ॐ अथर्ववेदाय नमः
ॐ अधर्नमनाशकाय नमः
ॐ आत्मैक्याय नमः
ॐ आशुतोषाय नमः
ॐ अद्वैताय नमः
ॐ उष्णशीयपर्जन्याय नमः
ॐ उपाधिरहिताय नमः
ॐ एकदंताय नमः
ॐ ऐं वाक्यप्रदाय नमः
ॐ ऐंश्वर्याय नमः
ॐ ओंकारेश्वराय नमः
ॐ औदुंबरकल्पवृक्षाय नमः
ॐ ऋषये नमः
ॐ ऋग्वेदाय नमः
ॐ ऋणमोचनाय नमः
ॐ कलिमलहदहनाय नमः

ॐ कर्पूरगौराय नमः
ॐ कालान्तकाय नमः
ॐ क्लीं कृष्णाय नमः
ॐ कृतज्ञाय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ कैवल्यधामाय नमः
ॐ खं ब्रह्माय नमः
ॐ गं गणपतये नमः
ॐ गणाध्यक्षाय नमः
ॐ गजाननाय नमः
ॐ गुणातीताय नमः
ॐ गोविंदाय नमः
ॐ घृष्णेश्वराय नमः
ॐ चिरंजीविने नमः
ॐ चैतन्याय नमः
ॐ जगध्दीशाय नमः
ॐ जगन्नाथाय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ जगध्दीताय नमः
ॐ जितेंद्रियाय नमः
ॐ जीवन्मुक्ताय नमः
ॐ तेजोमयाय नमः
ॐ तिमिरनाशकाय नमः
ॐ तत्पुरूषाय नमः
ॐ तुर्यातीताय नमः
ॐ दयानिधये नमः
ॐ द्रां दत्तात्रेयाय नमः
ॐ दिव्याय नमः
ॐ दिगंबराय नमः
ॐ दु:खभंजनाय नमः
ॐ देवाधिवाय नमः

ॐ धर्मरक्षकाय नमः
ॐ नग्नाऽवधूता नमः
ॐ नारायणाय नमः
ॐ निर्विकाराय नमः
ॐ निरंजनाय नमः
ॐ नित्यशुध्दाय नमः
ॐ पुरूषोत्तमाय नमः
ॐ पतितोध्दारकाय नमः
ॐ परमात्मने नमः
ॐ पुण्यपुरूषाय नमः
ॐ परब्रह्मस्वरूपिणे नमः
ॐ परमहंसाय नमः
ॐ प्रत्यक्षाय नमः
ॐ परोक्षाय नमः
ॐ परात्पराय नमः
ॐ प्रसन्नवदवाय नमः
ॐ परेशाय नमः
ॐ पापविमोचनाय नमः
ॐ ब्रह्मांडनायका नमः
ॐ ब्रह्मारूपाय नमः
ॐ भक्तवत्सलाय नमः
ॐ भक्ततारकाय नमः
ॐ भजनप्रियाय नमः
ॐ भागवतधर्माय नमः
ॐ भूमंडलाचार्य नमः

ॐ महादेवाय नमः
ॐ मृत्युंजयाय नमः
ॐ महासिध्दाय नमः
ॐ यजुर्वेदाय नमः
ॐ योगेश्वराय नमः
ॐ रां रामाय नमः
ॐ रामदासाय नमः
ॐ लंबोदराय नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ विश्वदेवाय नमः
ॐ वेदपुरषाय नमः
ॐ वेदप्रियाय नमः
ॐ शिवस्वरूपाय नमः
ॐ शेगांवनिवासिने नमः
ॐ स्मर्तृगामिने नमः
ॐ स्मरणमात्रसंतुष्टाय नमः
ॐ सर्वयंत्रमंत्रतंत्रस्वरूपाय नमः
ॐ सर्वसंपुष्टपल्लवस्वरूपाय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सच्चिदानंदांय नमः
ॐ सामवेदाय नमः
ॐ श्रीगुरूदेवाय नमः
ॐ हरिहराय नमः
ॐ ज्ञानेशाय नमः

अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक महाराजाधिराज योगिराज परब्रह्म सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगावनिवासी समर्थ सदगुरू श्री गजानन महाराज की जय ॥

॥ श्री गजानन महाराजांची आरती ॥

जय जय सच्चित्स्वरूपा स्वामी गणराया । अवतरलासी भूवर जड़ -मूढ ताराया ॥

जयदेव जयदेव ॥ धृ.॥

निर्गुण ब्रह्म सनातन अव्यय अविनाशी । स्थिरचर व्यापुन उरले जे या जगतासी

तें तूं तत्त्व खरोखर नि:संशय असशी । लीलामात्रे धरिले मानवदेहासी ॥ १ ॥ जय

होऊं न देशी त्याची जाणिव तूं कवणा । करुनि 'गणि गण गणात बोते ' या भजना ।

धाता हरिहर गुरुवर तूंचि सुखसदना । जिकडे पाहावे तिकडे तूं दिससी नयना ॥ २ ॥ जय

लीला अनंत केल्या बंकटसदनास । पेटविले त्या अग्नीवाचुनि चिलमेस ।

क्षणांत आणिले जीवन निर्जल वापीस । केला ब्रह्मगिरीच्या गर्वाचा नाश ॥ ३ ॥ जय

व्याधी वारून केले कैकां संपन्न । करविले भक्तालागी विठ्ठलदर्शन ।

भवसिंधु हां तरण्या नौका तव चरण । स्वामी दासगणूचे मान्य करा कवन ॥ ४ ॥ जय

अनंतकोटि ब्रह्मांडनायक महाराजाधिराज योगिराज परब्रह्म

सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगावनिवासी समर्थ सदगुरू

श्री गजानन महाराज की जय ॥

॥ प्रार्थना ॥

सदा सर्वदा, योग तुझा घड़ावा,

तुझे कारणी देह माझा पड़ावा

उपेक्षु नको गुणवंता अनंता,

रघुनायका मागणे हेचि आता ॥

उपासनेला दृढ़ चालवावे

भू-देव संतासी सदा नमावे ।

सत्कर्म योगे वय घालवावे,

सर्वा मुखी मंगल बोलवावे ॥

ज्या ज्या ठिकाणी मन जाए माझे,

त्या त्या ठिकाणी निज रूप तुझे

मी ठेवितो मस्तक ज्या ठिकाणी,

तेथे तुझे सद्गुरू पाय दोन्ही ॥

PRAYER

!! Om Shri Gajananay Namah !!

I PRAY TO THEE, MOST HUMBLY, O'ALMIGHTY GOD, TO SHOWER YOUR KIND BLESSINGS, ON ME AND ALL MEMBERS OF MY FAMILY SO THAT WE LEAD A LIFE WORTHY OF YOUR GLORY. I SEEK YOUR GUIDANCE AS ALSO THAT OF OTHER HOLY SPIRITS TO ENABLE US TO PERFORM OUR RIGHT DUTIES. MAY YOUR GRACE PERMEATE OUR THOUGHTS, SPEECH, ACTIONS, CONDUCT AND DISPOSITION.

O'MASTER, LET PURITY BE THE HALL MARK OF OUR LIFE. GIVE US STRENGTH TO EARN MERIT THROUGH BENEVOLENCE. PARDON US FOR ALL OUR PAST EVIL THOUGHTS, UTTERANCES AND DEEDS. I PRAY TO THEE TO DISPEL COVETOUSNESS FROM OUR MINDS SO THAT WE DO NOT HATE OTHERS OR ENVY THEIR RICHES AND PROSPERITY WHICH THEY MIGHT BE ENJOYING DUE TO THEIR PAST MERIT. MAY WE TREAD THE PATH OF RIGHTEOUSNESS.

O'GOD MAY OUR HOUSEHOLDS BE FILLED WITH PEACE AND HAPPINESS. MAY HUMILITY TRIUMPH OVER CONCEIT AND EGOTISM. MAY GRATITUDE BE NOT PAID BY INGRATITUDE.

THIS PRAYER, I MAKE AT YOUR SACRED FEET, MY LORD, AS A PROVISION FOR A MORE PURPOSEFUL LIFE.

Shubham Bhavatu